SJIF 2023 = 7.858

ISSN: 2277-7857

समकालीन हस्तक्षेप

बौद्ध, जैन तथा चार्वाक

दर्शन और प्रासंगिकता

वर्ष : 17, विशेषांक : 01

समकालीन हस्तक्षेप एक पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका है। इसका ISSN 2277-7857 (प्रिंट) तथा SJIF 2023 = 7.858 है। इस शोध-पत्रिका में प्रकाशन हेतु मुख्य विषय हिंदी साहित्य, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, संस्कृति, कला, समसामयिक मुद्दे आदि हैं। वर्तमान विशेषांक का उद्देश्य भारतीय संदर्भ में साहित्य, दर्शन और समाज के उन महत्वपूर्ण विषयों पर शोधपरक लेखों को प्रस्तुत करना है, जो शोधार्थियों और अध्यापकों के लिए उपयोगी हों, साथ ही सामान्य पाठक भी उस विषय से सम्बंधित लेखों को पढ़कर एक आधारभूत समझ बना सकें। यह विशेषांक उस श्रृंखला की पहली कड़ी और पहला लघु प्रयास है।

ISBN: 978-81-963936-2-5

9 788196 393625

OPENMINDED®

समकालीन हस्तक्षेप

बौद्ध, जैन तथा चार्वाक

दर्शन और प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

OPENMINDED®

OPENMINDED® is a registered trademark and an imprint of the owners of Indian Publications.

Published by **Indian Publications**
OpenMinded, Maharana Pratap Nagar, Bhopal
Madhya Pradesh, PIN 462011, India
First Edition: November, 2024

ISBN : 978-81-963936-2-5

Design & layout by OpenMinded Ventures
Printed & bound at Sristi, Kolkata

Price: ₹135

© *समकालीन हस्तक्षेप*

ISSN नं. 2277-7857
वर्ष 17, विशेषांक – 1

सर्वाधिकार सुरक्षित

समकालीन हस्तक्षेप साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका है।

संपर्क विवरण

वेबसाइट: www.hastakshep.co.in
ई-मेल: hastakshep@hotmail.com
WhatsApp नं. +91 94311 09143

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल

उप-संपादक

डॉ. अलका धनपत

डॉ. रजनी बाला अनुरागी

डॉ. मोहन लाल चढ़ार

डॉ. दीनानाथ

डॉ. प्रदीप कुमार, सत्यवती कॉलेज, नई दिल्ली

डॉ. राहुल सिद्धार्थ, साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची

डॉ. प्रवीण कटारिया, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

डॉ. हंसा दीप, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, कनाडा

डॉ. विपिन कुमार शर्मा, बिष्ट राजकीय महाविद्यालय, उत्तराखंड

डॉ. उमाशंकर कौशिक, के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज, मुंबई

डॉ. अनीश कुमार, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़

डॉ. विकास कुमार पाठक,अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, दिल्ली

डॉ. शरद सोनवने, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर

डॉ. अवधेश कुमार, डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

डॉ. सुनीता गुरुंग, लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लेखराम सेलोकर, आनंद बुद्ध विहार, नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. लोकेश चौधरी, श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, राजस्थान

डॉ. अमित कुमार, शिवाजी कॉलेज, नई दिल्ली

डॉ. आमिर खान अहमद, हरी-गायत्री दास महाविद्यालय, असम

डॉ. संदीप कुमार, मदरहूड विश्वविद्यालय, उत्तराखंड

डॉ. प्रत्युष प्रशांत, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. प्रतीक सागर, शारदा स्कूल ऑफ़ डिजाईन, आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग, ग्रेटर नॉएडा

अनुक्रम

संपादकीय

1.	बौद्ध धर्म और दर्शन एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता	डॉ. संदीप कुमार	7-12
2.	बौद्ध दर्शन एवं शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य	डॉ. नेहा गोस्वामी	13-21
3.	बौद्ध दर्शन का वैशिष्ट्य और उसकी प्रासंगिकता	कु. सुषमा	22-30
4.	आधुनिक जीवन में बौद्ध-दर्शन के ब्रह्मविहार की प्रासंगिकता	कमलेश अहिरवार	31-37
5.	महाभिनिष्क्रमण की अवधारणा: एक विमर्श	डॉ. रमेश रोहित (रत्नशील राजवर्धन)	38-43
6.	श्रमण संस्कृति का पूर्वेतिहस : एक अनुशीलन	शुभम महेश गजभिये	44-54
7.	अभिधम्म पिटक: अवलोकन, वर्गीकरण एवं विशेषताएं	अविनाश बर्मन	55-66
8.	डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म के 'नवयान' के संदर्भ में विश्लेषण	डॉ. राजा राम	67-78
9.	हिंदी साहित्य पर बौद्ध चिन्तन का प्रभाव	राज कुमार	79-84
10.	जैन दर्शन में पंचशील का नैतिक दृष्टिकोण	विकास मिश्र	85-90
11.	जैन दर्शन में प्रतिपादित पंचमहाव्रतों का स्वरूप एवं उपयोगिता	डॉ. ऋषिका वर्मा	91-96
12.	हिंदी का जैन साहित्य	डॉ. अनीश कुमार	97-102
13.	चार्वाक दर्शन और वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता	डॉ. कपिल कुमार गौतम	103-108
14.	चार्वाक दर्शन की प्रासंगिकता	शोभित द्विवेदी	109-115

संपादकीय

सृष्टि के आरंभ से ही जीवन और जगत के गूढ़तम रहस्यों को जानने की जिज्ञासा मनुष्य के मन में रही है। इस जीवन-जगत के सूक्ष्म और अज्ञात तथ्यों का ज्ञान ही दर्शन के अंतर्गत प्राप्त किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि विश्व में दर्शन का विस्तार भारत से ही आरंभ हुआ था। भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में दार्शनिक धारणाओं का गहन जुड़ाव रहा है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक अनेक दार्शनिक और चिंतक इस भारत भूमि पर पैदा हुए हैं। भारतीय दर्शन का आरंभिक स्वरूप वेदों में दिखाई देता है। उपनिषदों में भारतीय दर्शन की धारणाओं की व्यापकता एवं स्थिरता दृष्टिगत होती है। सामान्यत: भारत में कुल नौ दार्शनिक विचारधाराएं मानी जाती हैं। जिनमें 6 को आस्तिक और 3 को नास्तिक माना जाता है। आस्तिक दर्शन में शामिल छः दर्शनों को षड्दर्शन कहते हैं, जो क्रमश: हैं- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त। इनके प्रणेता क्रमशः कपिल मुनि, महर्षि पतंजलि, गौतम ऋषि, कणाद, जैमिनि और आचार्य बादरायण थे। इन दर्शनों के आरंभिक संकेत उपनिषदों में मिलते हैं। नास्तिक दर्शन में बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन शामिल हैं जिनके प्रणेता क्रमश: गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी और आचार्य बृहस्पति हैं। वैदिक कर्मकांड से असंतोष और सामाजिक विषमता के कारण भारतीय दर्शन दो भागों यथा- आस्तिक और नास्तिक में विभाजित होता है। जिन्होंने वैदिक मान्यताओं को प्रमाण माना है उनको आस्तिक दर्शन कहा गया, जबकि जिन्होंने वेदों को प्रमाण नहीं माना और केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण माना है, उनको नास्तिक दर्शन कहा गया है। मनुस्मृति में कहा गया है कि 'नास्तिको वेदनिन्दक:' अर्थात जो वेदों की निंदा करता है वो नास्तिक है।

वेदों के तथ्यों को अप्रमाणिक मानकर अस्वीकार करने के कारण बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन को नास्तिक की श्रेणी में रखा गया है। इसलिए इन दर्शनों को वेद बाह्य भी कहा गया है। ये तीनों दर्शन सत्य और प्रत्यक्ष को स्वीकार करते हैं। प्राय: सभी दर्शनों ने मोक्ष प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य माना है। दुःख और जीवन की समस्याओं के निवारण के लिए सभी ने प्रक्रिया और मार्ग खोजने का प्रयास किया है। मोक्ष को बौद्ध दर्शन में निर्वाण कहा गया है, जबकि जैन दर्शन में कैवल्य कहा गया है। चार्वाक दर्शन में केवल भौतिक संसार को ही सत्य माना है।

आज के समय में मनुष्य ने अपने लिए सुख संबंधी संसाधनों का विकास बहुत कर लिया है। श्रम, दूरी और समय की जटिलता को संसाधनों की सहायता से काफी हद तक आसान बना लिया गया है। लेकिन इसी के परस्पर दुःख, अवसाद, तनाव, चिंता इत्यादि नकारात्मक भावों की समाज में वृद्धि भी हुई है। ऐसा नहीं है कि पहले चिंता और दुःख नहीं थे। ये सब पहले भी थे, इसीलिए भारतीय चिंतन परंपरा में दुःख और चिंता के संदर्भ में दार्शनिक विवेचन किया गया है। बौद्ध दर्शन में दुःख के संबंध में चार आर्य सत्य गए हैं- दुःख (दुःख है), दुःख समुदय (दुःख का कारण है), दुःख निरोध (दुःख का निवारण है), और दुःख-निरोध-गामिनी प्रतिपदा (दुःख निवारण के लिए मार्ग है)। इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग भी कहा जाता है।